गोर्की की उड़ान

लेखक और चित्रकार: विलियम स्टिग

अनुवादक: अशोक गुप्ता

गोर्की की उड़ान

लेखक और चित्रकार: विलियम स्टिग

अनुवादक: अशोक गुप्ता

जैसे ही माँ-बाप ने उसे चूमा, अलविदा कहा, और घर से निकले, गोर्की ने रसोई के सिंक पर अपनी प्रयोगशाला जमाई. उसने कांच के एक साफ गिलास में थोड़ा पानी छिड़का, और फिर उसमें थोड़ा यह और थोड़ा वह डाला : एक-एक चम्मच चिकिन-सूप, चाय की पत्ती, सिरका, पिसी हुई थोड़ी कॉफी, टेलकम-पाउडर के डिब्बे को एक बार हिलाया, लाल-मिर्च की बोतल दो बार हिलाई, थोड़ी सी दाल-चीनी और फिर किया टोमेटो-सॉस का छिड़काव. फिर उसने गिलास में पड़ी चीजों को जोरों से हिलाया और ऊपर उठाकर मिक्सचर को रोशनी में देखा. वो अभी कुछ धुंधला था!

बड़े ध्यान से उसने पिताजी की थोड़ी ब्रांडी भी उसमें डाली. मिक्सचर थोड़ा बेहतर हुआ. लेकिन अभी भी कुछ कमी थी. पर क्या?

आहा! गुलाब का इत्र! गोर्की अपनी माँ की सबसे बढ़िया इत्र की बोतल ले आया. उसका इरादा तो कुछ ही बूँदें डालने का था, पर इत्र की महक से वो बहक गया और उसने बोतल में जितना इत्र बचा था, लगभग आधी बोतल, गिलास में उड़ेल दी.

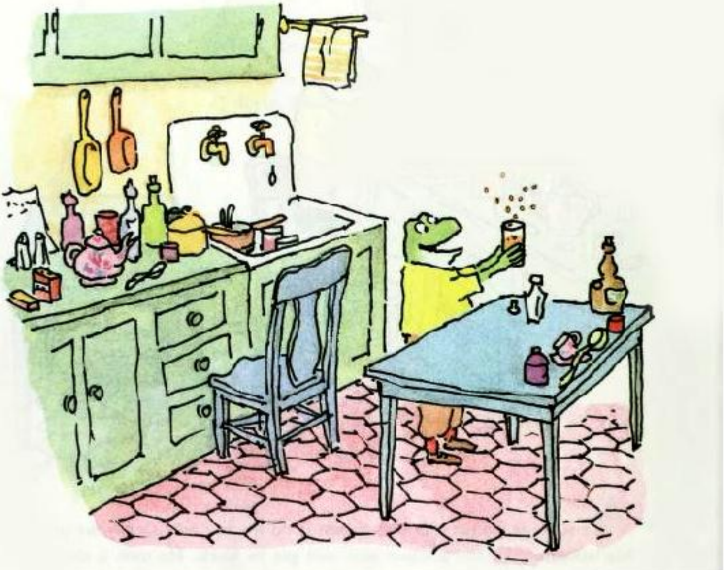

अब कुछ बात बनी! भारी पदार्थ गिलास के पेंदे में नीचे बैठ गया. पर जो ऊपर तैर रहा था वो आग के अंगारों जैसा, नन्हे-नन्हे बुलबुलों से भरा, लाल-सुनहरे रंग का एक द्रव्य था. ध्यानपूर्वक, सधे हाथों से उसने बुलबुलों वाले द्रव्य को इत्र की बोतल में उड़ेल दिया और उसकी कॉर्क बंद कर दी. फिर वह बाहर धूप में निकला.

उसने बोतल को घर के पास एक पेड़ के ठूंठ पर रखा और उसे चारों तरफ से, कंकड़ों और ताजे डेजी के फूलों से सजाया. फिर थोड़ा पीछे हटकर, उसने अपने जादुई-द्रव्य के सामने निष्ठापूर्वक सिर झुकाया -- एक बार बाँहों को साइड में ले जाकर, एक बार सामने फैलाकर, एक बार भौंहों को उँगलियों से छूकर, और एक बार पैरों की उँगलियों को छूकर -- हर बार कहते हुए, "अउगा-लूगा, ओंगा-ऊगा."

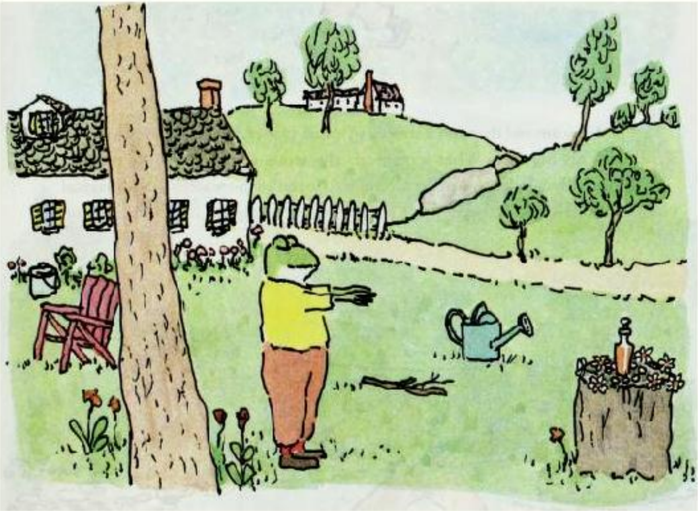

उसे पूरा भरोसा था कि थोड़ी ही देर में उसे पता चल जाएगा कि बोतल में किस प्रकार का जादू पैदा हुआ था. जब गोर्की को कोई खास काम नहीं होता, तो वह अक्सर हाथी-चट्टान पर जाता था. उसने सोचा, क्यों न बोतल लेकर हाथी-चट्टान पर जाकर आराम करूं? आगे जो होगा, वो बाद में देखूँगा!

वह घास में उगे छोटे-छोटे सफ़ेद, क्लोवर के फूलों को पैरों से रगड़ता हुआ आगे बढ़ा. क्या मदहोश खुशबू थी! पानी के बहने की आवाज सुनने के लिये वो थोड़ी देर पोगल-ब्रुक पर रुका. क्या मधुर संगीत था! वो दरिया में पड़े पत्थरों पर उछलता-कूदता हुआ दूसरे किनारे पहुंचा और फिर अपने रास्ते पर आगे बढ़ा.

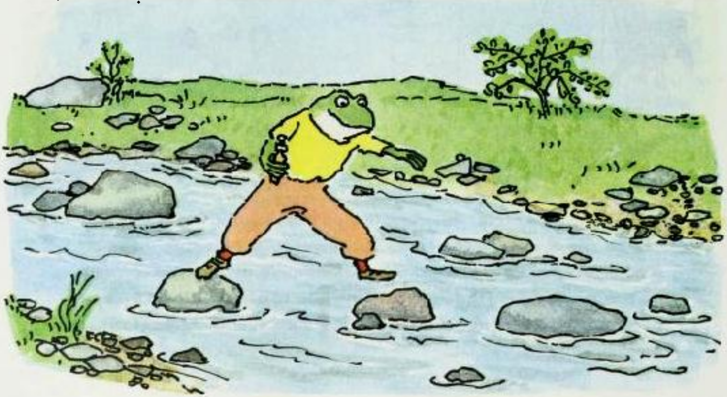

ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत थी, सब कुछ कितना साफ और ताजा लग रहा था. घास एकदम हरी-हरी. आकाश नीला -- एकदम नीला. सब जगह रोशनी ही रोशनी. हाथी-चट्टान तक पहुँचने की उसे ऐसी क्या जल्दी? गोर्की, हरी-भरी घास पर पैर फैलाकर लेट गया, नीले आकाश की ओर मुंह करके जिससे कि सूर्य देवता उसे अपनी गर्मी के आगोश में ले लें! सब कुछ कितना जादुई लग रहा था, और उसके दाहिने हाथ में थी - जादू की एक स्पेशल बोतल.

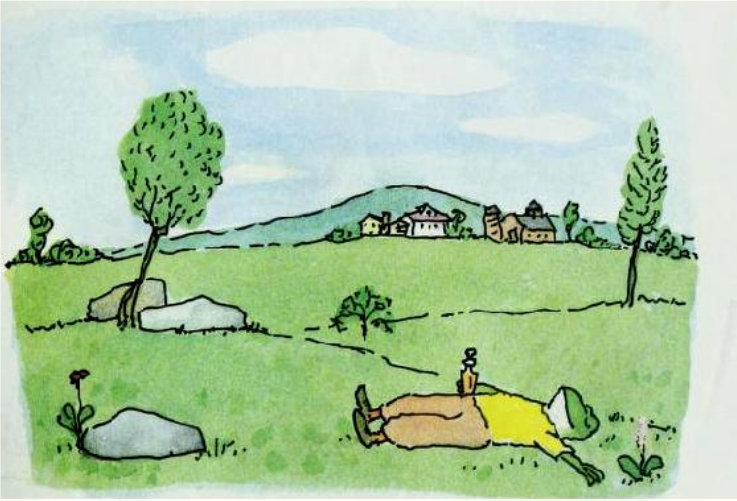

एक छोटा चमकीला सांप घास में रेंगता हुआ गोर्की के पेट पर चढ़ा. उसने बोतल की तीन बार परिक्रमा की और फिर से घास में रेंगता हुआ आगे चला गया. गोर्की ऊँघने लगा. आसमान पर बादल ऐसे लग रहे थे जैसे किसी ने सफ़ेद कपड़े सुखाए हों. गोर्की को नींद आ गई. बाहर खुले आसमान में भले ही सूरज चमक रहा हो, पर गोर्की के अंदर के आसमां में तो सितारे जगमगा रहे थे.

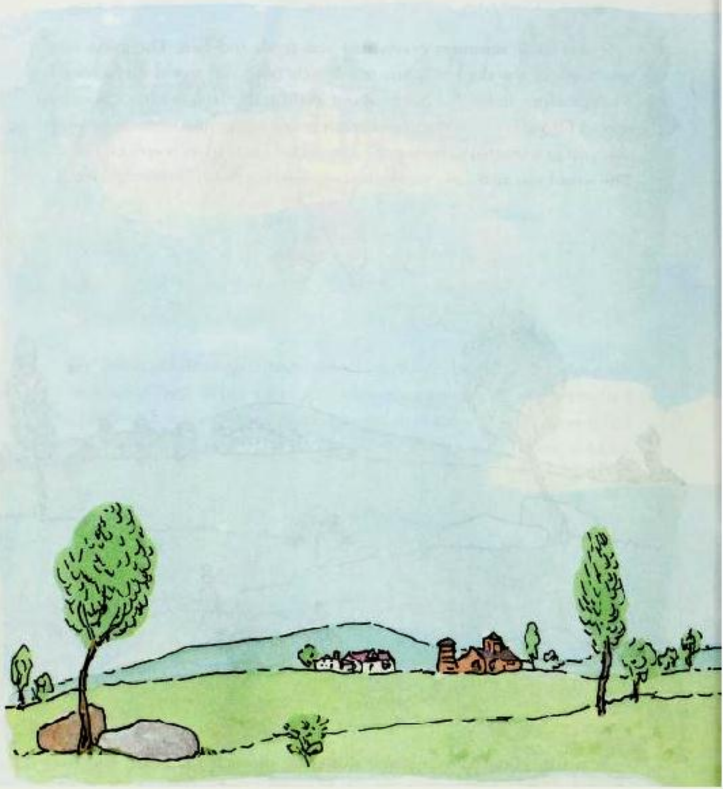

गोर्की को ऐसा लगा कि जिस चीज ने उसे जमीन से बांध रखा था उसकी पकड़ ढीली पड़ गई हो. फिर उसका शरीर पानी के बुलबुले की तरह हवा में ऊपर उठा और पूर्व-दिशा की ओर उड़ते हुए आगे बढ़ा.

जब गोर्की उठा, तो वो आसमान में उड़ रहा था. पर उसे बिल्कुल डर नहीं लग रहा था. जिस हरी घास पर वो अभी लेटा था वह एक गलीचे की तरह उसके नीचे, दूर-दूर तक फैली थी. उसने खुद को, हवा की तरह हल्का महसूस किया. उसे पक्का विश्वास हुआ कि अब वह नीचे नहीं गिरेगा.

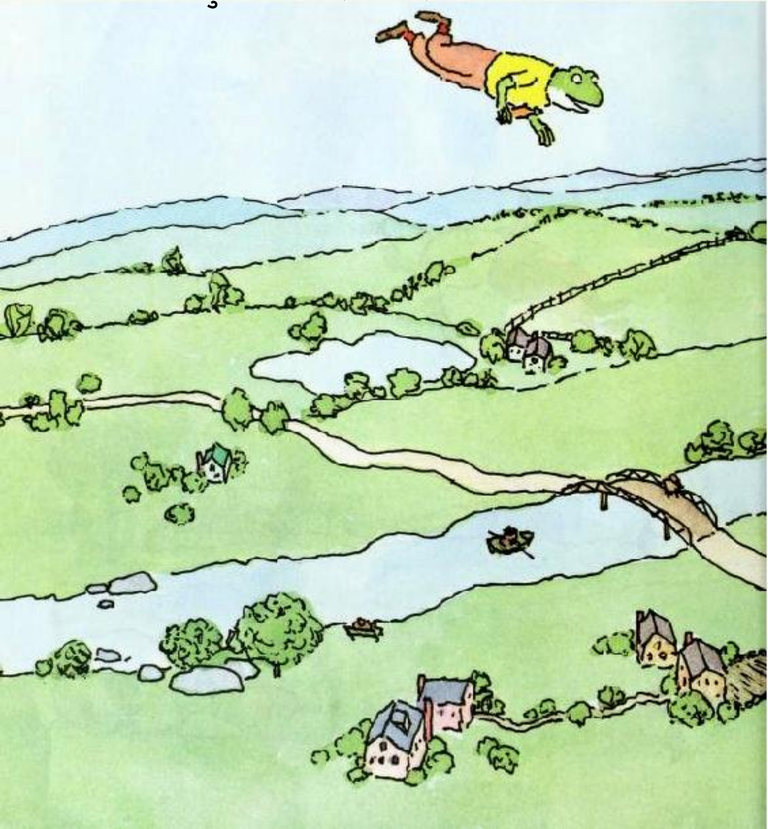

अब यह पक्का था कि उसने वाकई में एक जादुई-द्रव्य तैयार कर लिया था. उसे महसूस हुआ कि जिस हाथ से वह बोतल पकड़े था उससे ढेर सारे बुलबुले उसकी बांह में घुस रहे थे.

बेशक वह हवा में उड़ तो रहा था. पर वो जा कहां रहा था? वो यह जानने को बेहद उत्सुक था. तभी एक ड्रैगन और तितली उसकी ओर तेजी से झपटे. डर के मारे उसकी हालत खराब हुई. ध्यान से देखने पर पता चला कि वो डरावने जीव असल में हवा में उड़ती पतंगें थीं!

नीचे, पतंगों की डोरियां कुत्तों के पिल्लों के हाथों में थीं. लगता था जैसे वे गोर्की की उड़ान से काफी प्रभावित थे और जोर-शोर से कूद-कूद कर उसकी तरफ इशारे कर रहे थे. उसने एक बार उनकी ओर हाथ भी हिलाया. फिर वो पेड़ों के पीछे से होता हुआ उनकी निगाह से ओंझल हो गया.

धीरे-धीरे करके गोर्की एक आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा था. जैसे-जैसे गोर्की खेतों के ऊपर ऊंचे-नीचे, कभी एक तरफ और कभी दूसरी तरफ उड़ रहा था, वैसे-वैसे ढेर सारी आश्चर्यचकित और विस्मयकारी आँखें आसमान में उसे ताक रहीं थी. किसान अपना कामकाज छोड़कर आसमान में उसे घूर रहे थे.

नाव में बैठे सूअर ने जब ऊपर देखा तो
उसके हाथ से मछली पकड़ने की बंसी ही गिर गई,

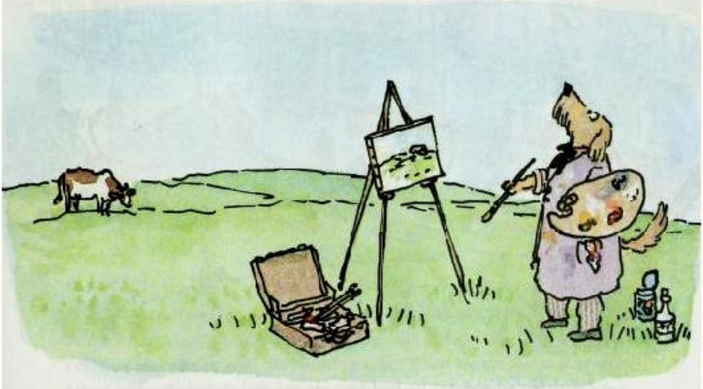

चित्रकार ने चित्र बनाना रोककर आसमान की ओर देखा.

खरगोश ने बीच हवा में झूला रोककर अपनी नजर ऊपर उठाई,

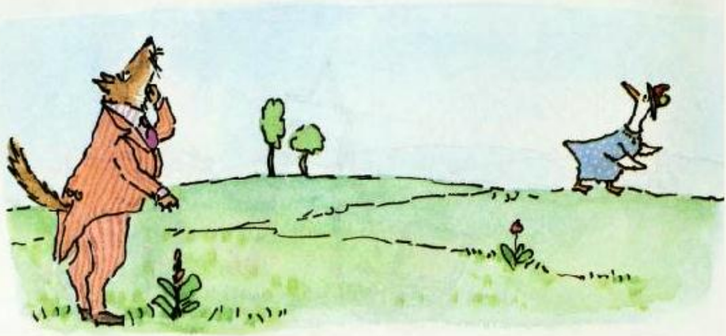

लोमड़ी के मुंह से बत्तख, नीचे गिरी. फिर लोमड़ी ऊपर की ओर देखने लगी और बत्तख तेजी से अपनी जान बचाकर भागी. पर जाते-जाते बत्तख ने भी रुककर आसमान के नज़ारे को निहारा.

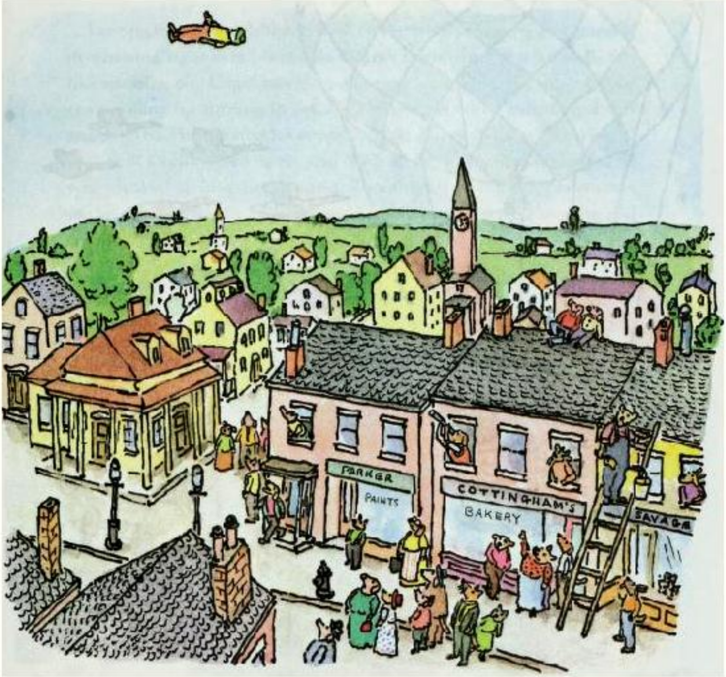

जब गोर्की प्रून-विल के ऊपर से गुजरा, तब लोग खिड़कियों से गर्दन मरोड़कर उसकी ओर देखने लगे. वे घरों और दुकानों से नीचे गली में आ गए. जहाज के एक कप्तान ने अपनी दूरबीन लगाकर आसमान में उड़ते उस अजूबे को देखा. (वो कैसे उड़ रहा है? उसे कौन संभाले है? वो सोचने लगा) पेन्टर एक सीढ़ी पर चढ़कर घर पेंट कर रहा था. उसके ब्रुश से पीला रंग टपक रहा था. उसने भी अपना काम रोका और वो भी नीले आसमान की ओर देखने लगा.

गोर्की ने सोचा, "सारी दुनिया मुझे देख रही है, यह कैसे हो सकता है कि मैं कुछ न करूँ?" उसने अपने अंगूठे बगल में दबाए और आँखें मटकाईं, कूल्हे हिलाये, एड़ियाँ एक-दूसरे से बजाईं, और पैरों की उँगलियाँ घुमाईं. गर्म हवा के गुब्बारे में उड़ते हुए दो खरगोश, उस छोटे से मेढ़क को हवा में कलाबाजियां लगाते हुए देखकर एकदम हैरान हुए.

खरगोशों को हैरत में छोड़कर, गोर्की ने अपने चचेरे भाई गोगोल के लॉन में उतरने के लिए नीचे छलांग लगाई. अब वह सचमुच अपने करिश्मों का दिखावा करना चाहता था. गोगोल घास पर अपने खिलौनों से खेल रहा था. गोर्की, फिरकी की तरह तेजी से घूमता हुआ गोगोल के पास से गुजरा. गोगोल फटी आँखों से उसे देखता हुआ बोला, "यह क्या हो रहा है, गोर्की? क्या वो तुम हो?"

"हाँ" गोर्की ने चिल्लाकर कहा. वह सिर्फ इतना ही कह कर फिर से ऊपर उड़ गया. उड़ते हुए वह गोगोल के चेहरे पर अचरज और आश्चर्य को याद करके खूब हंसा.

होश आने से थोड़ा पहले, उसने महसूस किया कि शांत नीला आसमान अब उसके बहुत पीछे रहा गया था. वह अब काले बादलों के बीच था जो नीचे जमीन को अपनी उदासी से घेरे हुए थे.

अचानक एक भयंकर तूफ़ान आया. बिजली की चमक और गड़गड़ाहट ने आकाश को फाड़ डाला. ओलों की मार से गोर्की का शरीर चकनाचूर होने लगा. हवा के प्रचंड झोंकों ने उसे इधर-उधर पटका. इससे उसकी पैन्ट लगभग फट गई. यह कोई खेल-खिलवाड़ नहीं था. काफी देर यह सब होता रहा -- अंत में तूफ़ान रुका. फिर ओले बरसात की मोटी-मोटी बूंदों के थपेड़ों में बदल गए.

जैसे ही गोर्की दुबारा नीले आकाश के नीचे पहुंचा, उसने चैन की साँस ली. वह अब तूफान से बहुत ऊपर था. उसे नीचे के बादलों में बिजली की हल्की-हल्की चमक दिख रही थी और गड़गड़ाहट भी धीमी-धीमी सुनाई दे रही थी. तूफ़ान आगे बढ़ चुका था. परन्तु वह खुद लगभग स्थिर था.

दिन ढल रहा था. आधा आसमान लाल हो चुका था. धीरे-धीरे रात का अँधेरा दूर-दूर तक फैल गया. गोर्की को बहुत नीचे, शहर की रोशनियां दिखाई दे रहीं थीं. उसे लगा कि वह एकदम स्थिर था और आकाश में ऐसे लटका हुआ था जैसे कि हैंगर पर कोट लटका हो.

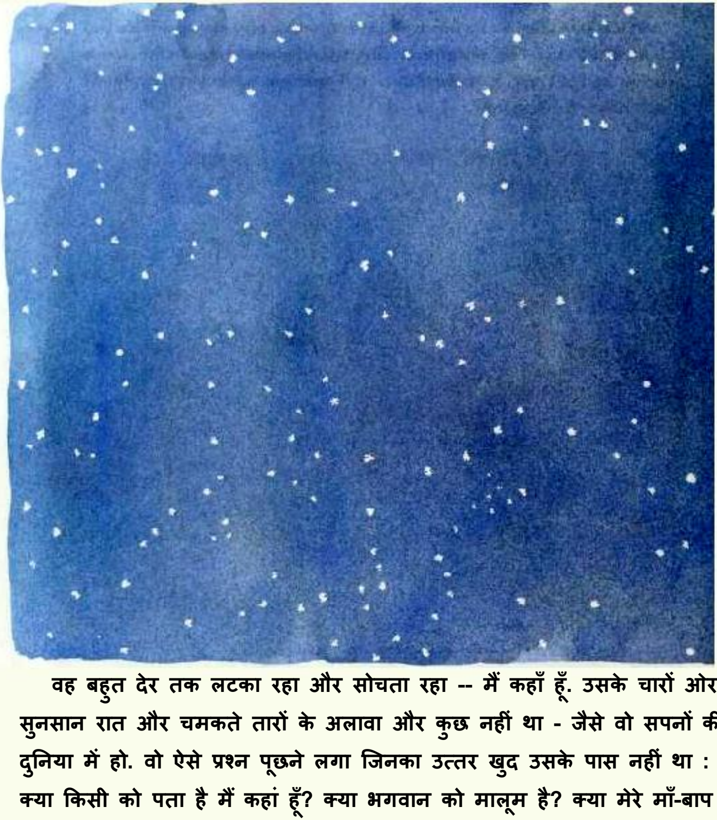

वह बहुत देर तक लटका रहा और सोचता रहा -- मैं कहाँ हूँ. उसके चारों ओर सुनसान रात और चमकते तारों के अलावा और कुछ नहीं था - जैसे वो सपनों की दुनिया में हो. वो ऐसे प्रश्न पूछने लगा जिनका उत्तर खुद उसके पास नहीं था : क्या किसी को पता है मैं कहां हूँ? क्या भगवान को मालूम है? क्या मेरे माँ-बाप को मालूम है? काश, वो इस समय उनके साथ घर पर होता, और अपने पंखों वाले पलंग पर सो रहा होता. वह बहुत थक गया था. अब वह भला कैसे नीचे उतरे, और कैसे घर वापिस पहुंचे?

क्या वो कभी वापिस घर पहुंच पाएगा? जादुई द्रव्य ने ही तो उसे हवा में लटकाए रखा था. अगर वह इसे फेंक दे तो क्या होगा? तो क्या वो सीधा धड़ाम से जमीन पर नहीं गिरेगा? फिर उसने बोतल और कसकर पकड़ ली. उसे जागते रहना होगा. गोर्की, जमीन पर धमाके के साथ गिरकर मरना नहीं चाहता था.

सुबह होने लगी. गोर्की को एक आइडिया आया जिससे उसकी नींद एकदम खुल गई. अगर वह बोतल से द्रव्य बूँद-बूँद करके टपकाये, तो? तो क्या वो जादू के चंगुल से थोड़ा-थोड़ा करके मुक्त हो पाएगा? चलो करके देखता हूँ, उसने सोचा.

उसने बोतल की कॉर्क ढीली की और एक बूँद द्रव्य टपका दिया. वह नीचे गिरा -- ज़ज़ूम -- और फिर अचानक वो रुक गया.

फिर से वही हुआ -- बोतल से दूसरी बूँद निकली. वो जमीन की ओर एक बार फिर गिरा. तीसरी बार उसने बोतल से कई बूँदें एक-साथ टपका दीं. फिर वो इतनी तेजी से नीचे गिरा, कि उसे लगा कि इस बार वो चल बसेगा. उसके बाद उसने बड़े ध्यान से, बोतल में से एक-एक बूँद ही टपकाई.

सूरज धीरे धीरे ऊपर चढ़ रहा था, और गोर्की हर बूँद के साथ धीरे-धीरे नीचे आ रहा था. जल्दी ही वह प्यारी जमीन के बहुत नजदीक पंहुचा. ज़मीन कितनी उम्दा लग रही थी! क्या जादू के कमाल से वो सीधा हाथी-चट्टान के ऊपर उतरेगा? क्या यह संभव होगा?

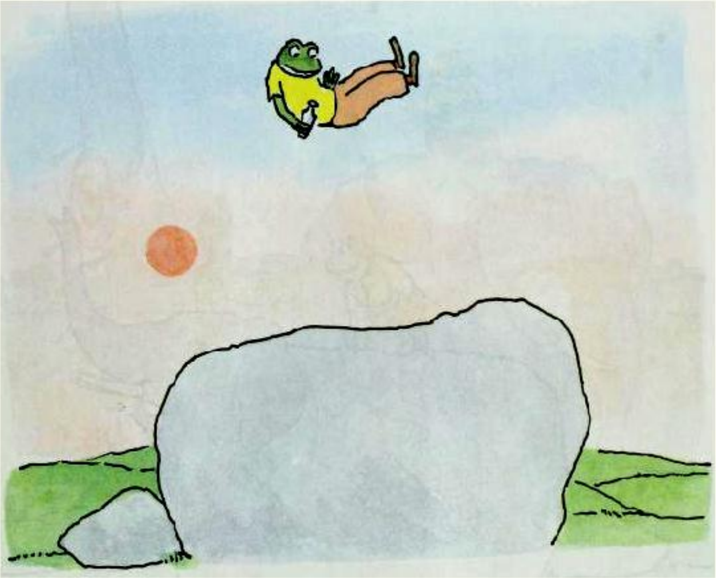

दो बूँदें (और एक दिन लेट) और फिर गोर्की चट्टान पर जमकर बैठा होगा. उसके पास सिर्फ इतना ही द्रव्य बचा था कि वह जमीन तक पहुँच सके. नहीं, शायद एक ही बूँद से काम चल जाएगा. उसने बोतल टेड़ी की, बूँद बोतल के मुँह पर थोड़ी देर रुकी और फिर सीधे हाथी-चट्टान के ऊपर गिर पड़ी.

फिर एक अजूबा हुआ – एक नायब जादू! हाथी-चट्टान हिली, जैसे वो उठने की कोशिश कर रही हो. उसके दोनों तरफ बड़े-बड़े पंखों जैसे कान निकल आए, सूंढ़ ऊपर उठी और उसमें से बिगुल-जैसी आवाज निकली, और गोर्की ने अपने आपको एक गरम-जीवित हाथी पर विराजमान पाया. पंखों वाला हाथी अब उस स्थान से चलने वाला था, जहाँ पर वह पिछले करोड़ों सालों से पत्थर बना बैठा था.

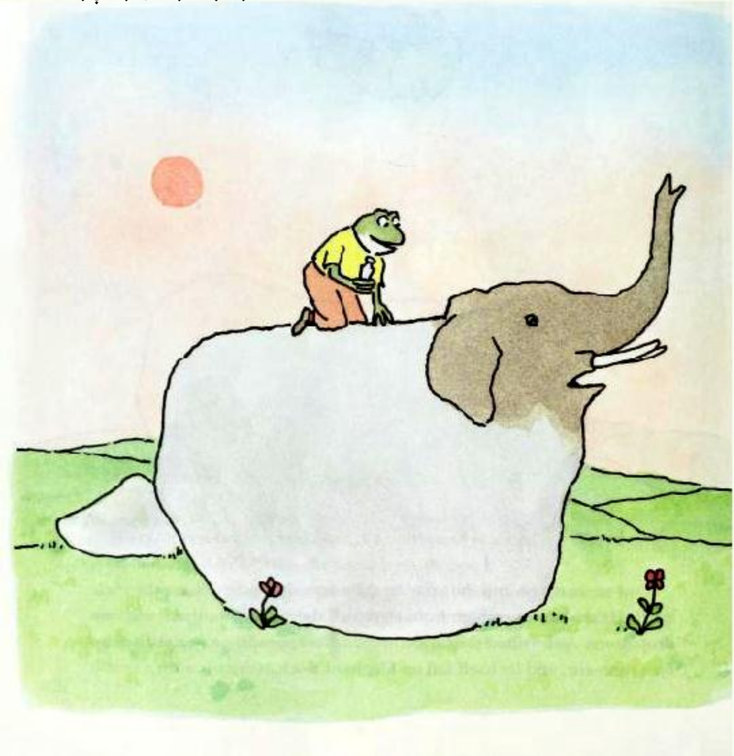

घास रगड़ता हुआ हाथी, गोर्की के घर की ओर चला.

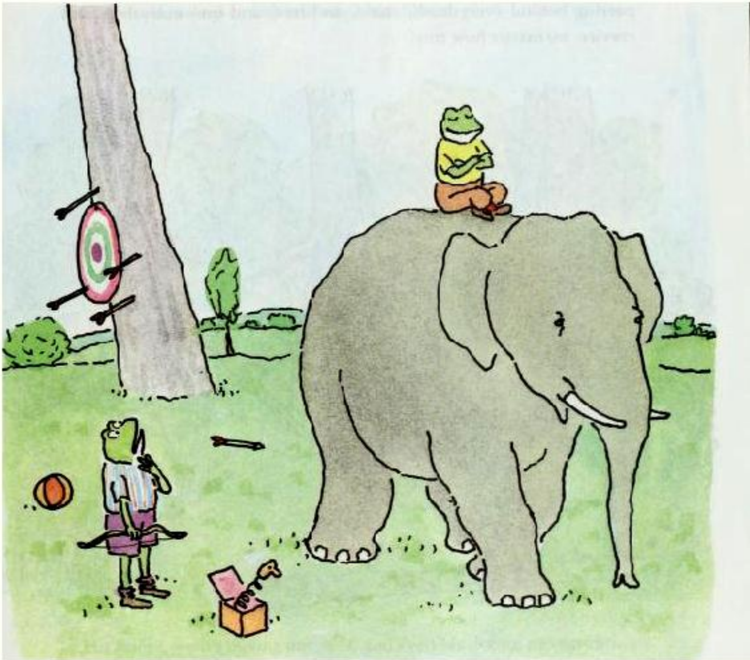

क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं कि गोर्की के चचेरे-भाई गोगोल पर क्या गुजरी होगी जब उसने गोर्की को हाथी पर बैठे देखा? क्या यह वही गोर्की था जो कल पहले बिना पंख के हवा में उड़ रहा था?

गोर्की के माँ-बाप सारी रात उसे ढूँढ़ते रहे. वे इतने चिंतित, दुखी और थक गए थे कि अपने कष्टों के निवारण के लिये वे अपनी जान लेने को तैयार थे. उन्होंने घर के चारों ओर - हर पेड़ और झाड़ी के पीछे, हर पत्थर के नीचे, हर छेद और सकरी दरार में छान-बीन की थी.

जब उन्हें यह विश्वास हुआ कि उनकी ओर आते हुए विशाल हाथी पर उनका बेटा ही बैठा था, तो वे खुशी से चिल्ला पड़े, "गोर्की डार्लिंग! प्यारे गोर्की! अरे इस पृथ्वी पर तुम कहाँ थे?"

"मैं तो इस पृथ्वी पर था ही नहीं." गोर्की बोला.

"तुम पृथ्वी पर नहीं थे?" उसकी माँ ने आश्चर्यपूर्वक पूछा.

"और यह हाथी कौन है?" पिता ने पूछा.

गोर्की ने लम्बी साँस ली और अपनी कहानी सुनाई.

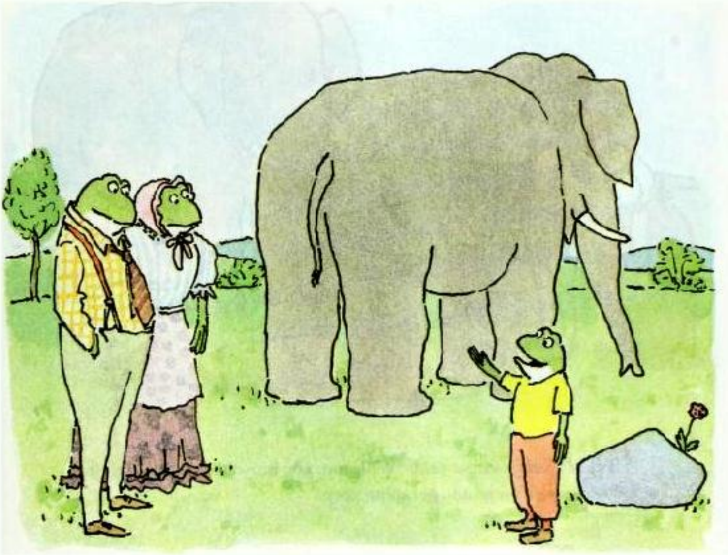

पिता को गोर्की की कहानी मन-गढ़ंत लगी. गोर्की की माँ, जो उसे बहुत प्यार करती थीं, को भी विश्वास नहीं हुआ. गोर्की बोला, “आप जिस सचमुच के हाथी को देख रहे हैं, वो कभी हाथी-चट्टान हुआ करता था. अब वहां कोइ चट्टान नहीं है."

"बकवास," उसका पिता ने रोष में कहा. "अब हाथी-चट्टान नहीं है? यह तो मुझे जा कर देखना ही पड़ेगा.”

कुछ देर बाद वे उस जगह पहुंचे जहाँ कभी हाथी-चट्टान हुआ करती थी. गोर्की के माँ-बाप ने कुछ देर तो खाली जमीन को देखा और फिर हाथी को. उनके मुँह खुले-के-खुले रह गए, एक शब्द भी बाहर नहीं निकला.

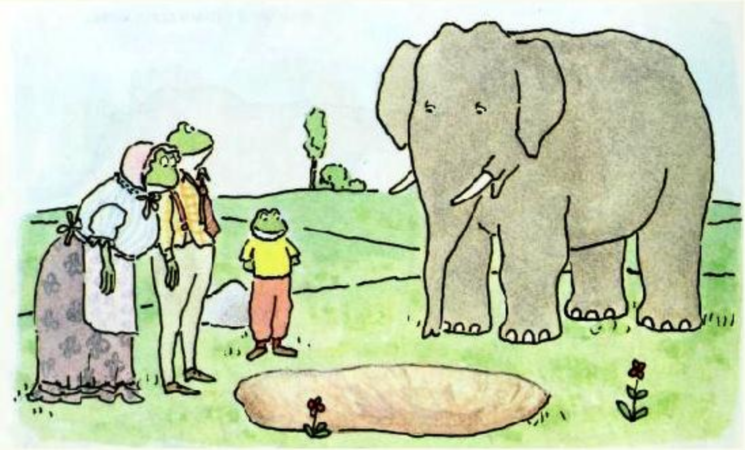

अंत में गोर्की के पिता बोले, "अच्छा, बेटा, तुम इतनी लम्बी उड़ान से थक गए होगे. चलो, अब घर चलो और आराम करो."